8-3-67 रिकार्ड:- धीरज धर मनवा... ओम शान्ती प्रातः क्लास

यह कौन कह सकते है बच्चों को? बाप ही कहते है हे बच्चों। सबको ही कहना होता है क्यों कि सभी दुःखी अधीय है। बाप को याद करते है कि दुःख से आकर लिबरेट करो। सुख का रास्ता बताओ। अब मनुष्यों को उसमें भी खास भारतवासियों को यह पता नही है याद नही है कि हम बहुत सुखी थे। भारत प्राचीन से प्राचीन खंड था। वण्डर आफ दी वर्ल्ड कहते है नां। यहां माया के राज्य में 7 वण्डर्स गाये जाते है। वो तो है स्थूल वण्डर्स। बाप समझाते है यह माया के वण्डर्स है जिनमें दुःख है। राम(बाप) का वण्डर है स्वर्ग। वो है वण्डर आफ दी वर्ल्ड। भारत स्वर्ग था हीरे जैसा था। वहां देवी देवताओं का राज्य था। यह भारतवासी सब भूल गये है। भल देवताओं के आगे माथा टेकते है। पूजा करते है परन्तु हू बहू जैसे कि कदू। जिनकी पूजा करते है उनकी बायोग्राफी को जानते नही है। जानना चाहिये नां। अन्धश्रदालू जितने भारतवासी है उतनी कोई और कौम नही। वो फिर भी जानते है बुध ने बोधी धर्म इब्राहिम ने इस्लामी धर्म स्थापन किया। मुहम्मद ने मुसलमान धर्म स्थापन किया। क्रिश्चन्स को भी पता है कि क्राइस्ट ने फलाने सम्वत में धर्म स्थापन किया। बाकी यह तो जो हिन्दु कहलाने वाले है, वास्तव में हिन्दु धर्म कोई है नही। हिन्दुस्तान तो शहर का नाम है। यह नही समझते है कि हम हिन्दुस्तान के रहने वाले है। हिन्दु कोई धर्म थोड़ेई है। आदी सनातन देवी देवता धर्म था यह भी कोई नही जानते है। इतने तुच्छ बुधी हो गये है। यह वेहद का बाप बैठ समझाते है। यहां तुम आये हो पारलौकिक बाप के पास। पारलौकिक बापही स्वर्ग स्थापन कर सकते है। कोई मनुष्य नही कर सकते है। गीता में मनुष्य का नाम डाल दिया है।जो कि पूरे 84जन्म लेते है। जिसके लिये कहते है कि कृष्ण भगवानोवाच कि मैं तुम को राजयोग सिखाता हूं। अब कृष्ण तो बच्चे-2 कह नही सकते। कृष्ण की आत्मा खुद ही इस समय पतित है। वो भी बाप से सुन रही है। इनको भी बाप कहते है हे कृष्ण की तमोप्रधान आत्मा तुम भी अपने जन्मों को नही जानती हो। तुमकृष्ण थे तो सतोप्रधान थे। फिर 84जन्म लेते-2 अभी तुम तमोप्रधान बन गये हो। भिन्न-2 नाम तुम्हारे पडे है। अभी तुम्हारा नाम ब्रह्मा रखा है। ब्रह्मा सो श्री कृष्ण वा विष्णु बनेंगे। बातएक ही है। ब्रह्मा सो विष्णु विष्णु सो ब्रह्मा। ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण ही फिर सो देवता बनते है। वो ही देवी देवताओं को फिर शुद्र बनना होता है। अब फिर ब्राह्मण बने हो। अब बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते है। यह है भगवानोवाच। तुम हो गये स्टूडेन्ट तो तुमको खुशी कितनी होनी चाहिये। परन्तु इतनी रहती नही है। धनवान धन के नशे में बहुत खुश रहते है नां। यहां भगवान के बच्चे बने हो तो भी इतनी खुशी नही रहती है। समझते ही नही है। रैप्स अर्थात कदर बुधी है। तकदीर में ही नही है तो ज्ञान की धारना कर ही नही सकते है। अब तुमको कदर से मन्दिर लायक बनाया जाता है। परन्तु माया का संग भी कम नही है। गाया भी जाता है संग तारे कुसंग बोडे। बाप का संग तुमको मुक्ति जीवन मुक्ति में ले जाता है,फिर रावण का कुसंग तुमको दुगती में ले जाता है। 5विकारों का संग हो जाता है। सभी धर्मों में सत्सुग तो बहुत ही करते है परन्तु वो है लतसंग। सीढ़ी से कोई धक्का देवे तो जरूर नीचे ही गिरेंगे नां। तो वहां भी लात मार कर एकदम नीचे गिरा देते है। खुद भी लात खाते है और दूसरों को भी लात मारते है।किसीकी भी सदगती नही कर सक्ते है। सर्व का सदगती दाता एक ही है। एक नानक का कलेण्डर बनाया हुआ है,वो भी ईशारा करते है किएक ही परमात्मा को याद करो। तो सिख लोग फिर भी नानक को ही क्यों याद करते है।उनको गुरू क्यों मानते है जब कि वो खुद कहते है कि उनको याद करो। कितनी सहज बात है। यह चित्र तो सिखों को दिखाना चाहिये। कोई भी होगा भगवान का ईशारा हमेशा ऊपर करते है। अब बाप बिना बच्चों को परिचय कौन दे? बाप ही बच्चों को अपना परिचय देते है।उनको अपनाबना कर सृष्टी की आद मध्य अन्त का परिचय देते है। बाप कहते हैं मैं तुमको आकर आस्तिक भी बनाता हूं। त्रिकालदर्शी

भी बनाते हैं। यह कोई साधु सन्त आद नही जानते है। वो होते है हद के ड्रामा। यह है बेहद का। तुम बच्चे जानते हो कि हमने सुख भीबहुत देखा है तो दुःख भी बहुत देखा है। यह भारत ऊंच ते ऊंच था। बहुत शाहुकर था। अब तो कितना कंगाल है। आगे यहां से कितनी कनक(गेहूं)जाती थी। अब तो बाहर से कितनी आती है। यह क्या हो गया है। ईटने तो होना ही है नां। ड्रामा भी बहुत मजे से बना हुआ है। कृष्ण और क्रिश्चन इनका हिसाब किताब है। इन्होंने भारत को लड़ाकर राजधानी ली। अब तुम लड़ाते हो। यह ड्रामा में नूंध है। वो आपस में लड़ते है। राजाई तो तुमको मिल जाती है। यह बातें कोई जानते नही है। वो है भक्ति मार्गके गुरू। भक्ति मार्ग के शास्त्रों की आथारटी है। भक्ति मार्ग के राजायें है निवृती मार्ग वाले। उनका जैसे कि राज्य है। सभी उनको माथा टेकते है। अब प्रेजीडन्ट तो खुद मालिक है नां। वो (सन्यासी) प्रजा हो गई। फिर भी उनके आगे जाकर माथा टेकते है। क्यों कि वो भक्ति की आथारटी है। भक्ति में भी जो जास्ती आथारटी वाले है उनको कम आथारटी वाले माथा टेकते है। ज्ञान देने वाला तो एक ही बाप है जो सबकी सदगती करते है। बाकी सब आत्मायें मुक्ति धाम में थी। तुम ही राज्य करते थे। सतयुग में सुर्यवंशी राज्य था। अब तुमसत्य नारायण की कथा सुनते हो। नर से नारायण बनने की कथा है। यह भी बड़े अक्षरों में लिख दो कि झूठी गीता से भारत झूठ खण्ड, वर्थ नाट अपेनी बना है। अभी सच्ची गीता से भारत सच खण्ड, वर्थ पाऊंड बनता है। झूठी गीता में तो पहले-2 ही ग्लानी लिखी हुई है। कि भगवानोवाच मैं सर्वव्यापी हूं। अब भगवान कहते है कि मैं ने तो ऐसे कहा नही है। तो झूठी गीता पढ़ते-2 ग्लानी करते-2 भारत की क्या हालत हो गई है। वर्थ नाट अपेनी बन गये है। फिर बाप आकर सच्ची गीता सुनाते है। सहज राज योग सिखाते है। तो वर्थ पाऊंड बन जाते है। बाबा बैठके बहुत समझाते हैं परन्तु बच्चे देह अभिमान कारण भूल जाते है। देही अभिमानी बने तो धारन भी हो। देहअभिमान कारण धारणा होतीनही है। तो अब बाप समझाते है कि मैं थोड़ेई कहता हूं कि मैं सर्वव्यापी हूं। सर्वव्यापी कहने से भी भारत ने दुर्गती को पाया है। मुझे तो कहते भी हो तुम मात पिता... तो उसका अर्थ क्या? तुम्हरी कृपासे सुख घनेरे... अब तो दुःख है। यह गायन किस समय का है यह भी समझते नही है। जैसे पंछी चूं-चूं करते रहते है। अर्थ कुछ भी नही होता। वैसे ही यह भी चूं-चूं करते रहते है, अर्थ कुछ नही है। बाप बैठ समझाते है यह सब है अनराईटियस। किसने अनराईटियस बनाया है। रावण ने। भारत सच खण्ड था तो सब ही सच बोलते थे। चोरी ठगी आद कुछ भी नही था। यहां तो कितनी चोरी चकारी आद है। डिफेन्स मनिसटर आद जाते है खरीद दारी करने उसमें अपनी रिश्वत तो रखाते ही है। गवर्मेन्ठ के आफीसिस खुद गवर्मेन्ट की चोरी करते है। फिर कैसे चलती है। बहुत करके सभी ही ऐसे है। कोई बिले अच्छे होते है। दुनियां में तो ठगी ही ठगी है। बड़े-2 आफीसिस चोरी करते है। तो उनको कोई पूछते भी नही है। गरीब ने कुछ चोरी की झट पैस हुआ तो गये जेल में।इनको कहा ही जाता है पाप की दुनियां।दुःखों की दुनियां। सतयुग को कहा ही जाता है सुखों की दुनियां। यह है विषयस वैशाल्य। सतयुग में है शिवालय। बाप कितनी अच्छी रीती बैठ समझाते है। यह है बड़े ते बड़े बाप का स्कूल।बच्चों को यह भी राय दी थी कि तुम जो यह लिखते हो ब्र,कुं-ईश्वरिय विश्व विदयालय-सो पीछे लिख दो गाड फादरली वर्ल्ड यूनिवरसिटी अर्थ भी कितना क्लीयर है। विश्व विदयालय। यह है गाडली यूनिवरसिटी। वो है डागली यूनिवरसिटी रात दिन का फर्क है। यहां तो एक दो को गाली देते रहते है नां। बाप बच्चे को कहते है हे कुत्ते का बच्चा। जो शरूड बच्चे होते है वो झट कह देते है हम कुत्ते का बच्चा तो आप भी कुत्ता ठहरे। जो शैतान बच्चे होते है वो तो बाप की भी पाग उतारने देरी नही करते है। खतम भी कर देते है। यह है ही आसुरी सम्प्रदाय। मुख से कहते भी है कि रामराज्य चाहिये। तो रावण राज्य ठहरा नां।

परन्तु उनमें कुछ भी बुधी नही है। अब बाप आकर समझदार बनाते है। कहते है इन विकारों को जीतो तो तुम जगत जीत बनेंगे। यह काम ही महाशत्रु है। बच्चे बुलाते भी इसीलिये है कि हम कभी कुत्तों को अ अन्दर गाड गाडेज बनाओ। संन्यासी लोग फिर अपने को कह देते है है शिवोअहम्। कोई फिर ब्रहमोहम कहते है। यह भी पता नही है कि ब्रहम अलग है। शिव अलग है। ब्रहम महातत्व है। शिव निराकार परमात्मा है। वो फिर कह देते है तत्व ज्ञानी ब्रहम ज्ञानी। सारा दिन ही शिवोअहम् , शिव काशी विश्व नाथ गंगे। बस सारा दिन यही कहते रहते है। शिव नें फिर गगा लाई। अब ज्ञान गंगों तो ह्यूमन है नां। बाप की महिमा तो बच्चे ही जानते है। आसुरी सम्प्रदाय तो नां बाप को जानते है नां ही बाप की महिमा को जानते है। तुम जानते हो वो प्यार का सागर है सुख का सागर है। बच्चों को भी प्यार का सागर बनना चाहिये। प्यार से ही कोई को भी समझाना है। बाप ज्ञान का सागर है। सबको ज्ञान सुनाते है तो यह प्यार है नां। बहुत प्यारे बन जाते है। टीचर स्टूडेन्ट को प्यार से पढ़ाते है तो कोई बैरिस्टर कोई इंजीनियर आदि बन जाते है। बाप कहते है कि तुम भी एक दो को प्यार करो। नम्बरवन प्यार तो यही है। बाप का परिचय दो। तुम गुप्त दान करते हो। एक दो के लिये घृणा भी नही रहनी चाहिये। नही तो तुमको भी दुःख खाने पड़ेगें। तिरस्कार किसीका करेंगे तो दुःख खावेंगे। कब भी नफरत नही रखो। तिरस्कार नही करो। देहअभिमान में आने से ही नफरत करते है। देही अभिमानी कभी नफरत नही करेंगे। देह अभिमान ही मूल पलीती बना देते है। देह अभिमान से ही पतित बने है। बाप देही अभिमानी बनाते है तो तुम पावन बनते हो। सबको यही समझाओ कि अब 84का चक्र पूरा हुआ है। देवी महारानी कितनी तंग है। उनको भी फिर घर में बन्द कर दिया है। जो हंगामा करते कराते है तो उनको फिर रायल रीती से घर में ही बन्द कर देते है। जो कि कोई भी उनके पास आ जा नही सकें। ऐसे भी कोई नही समझे कि उनको जेल में डाला है। कितनी बड़ी महारानी है राजस्थान की। उनको तुम्हारा पत्र जाना चाहिये। तुम क्यों हैरान हो रही हो। तुम्ही सूर्यवंशी महारानीथी। फिर 84जन्म लेते-2 उतरते-2 अब पतित बन गई हो। अब बाप फिर से महाराजा महारानी बना रहे है। तुम भीआकर बनो। बाप सिर्फ कहते है मामेकम् याद करो। तो पावन बन जाओगें। 5विकारों की खाद निकल जावेगी। तुम पवित्र बन कर पवित्र दुनियां के मालिक बन जाओगें। इस गिटपिट में तो तुम्हारे प्राण ही निकल जावेंगें। जो हंगामा करते है उनको फिर उड़ा देते है। तो तुम बच्चों को रहम दिल तो बनना है नां। विचारी महारानी का कल्याण करना है। सारा दिन सर्विस का ही ख्यालात चलना चाहिये। बाप डायरेक्शनस देते रहते है। ऐसे जो बहुत दुःखी है उनको लिखना चाहिये। और बहुत ही शार्ट में। बाप कहते है कि मुझे याद करो और वर्से को याद करो। एक शिव बाबा की ही महिमा है। मनुष्यों को बाप की भी महिमा का पता नही है। इतने ऐसे बुधी है। हिन्दी में भी पत्र लिख सकते हो। सर्विस करने का भी होसला चाहिये। बहुतों का पत्र लिख सकते हो। बहुत है जो आपघात करने बैठ जाते है। अब गुरु अगर आपघात करने बैठ जावें तो जो फालोवरस है उनका क्या हाल होगा। खुद ही कहते है कि जीवघाती महापापी। उनके फालोवरस यह नही समझते है कि उनके गुरु खुद ही जीवघाती महापापी है तो हम क्या फालो करें? गुरु को तो फालो करना पड़े। इसने घरबार छोड़ा है वो भी घर बार छोड़ कर जाकर बैठे। फालोवरस को तो फालो करना चाहिये नां। कब नही करेंगे। वो फिर पवित्र है तो पतित अपने को फालोवरस क्यों कहलाते है। माईयां भी फालोवरस बनती है। दुनियां में झूठ निरई झूठ है। अब तुमको श्रीमत देने वाला है शिव बाबा। वो है श्री-2 शिव बाबा। तुमको बनाते है श्री। श्रीश्री तो वो एक ही है। वो कब चक्र में आते नही है। बाकी तुमको श्री का टाइटल मिलता है। आजकल तो सबको ही श्री का टाइटल देते रहते है। कोई कदर थोड़ी है। बाप कहते है बन्दरों ने अपने ऊपर ताज रख दिया है। कहाँ तो वो निरविकारी कहाँ यह विकारी। रात दिन का फर्क है। तो बाप रोज समझाते रहते है कि एक तो दैवीगुण धारण करो। और सबको पैगाम पहुँचाओ